असहयोग आंदोलन : 1920–22 ई.

ब्रिटिश सरकार के अन्यायों—रौलेट एक्ट, जालियांवाला बाग, खिलाफत के प्रश्न आदि—के विरुद्ध सरकार के साथ असहयोग पर आधारित *गाँधीजी* के नेतृत्व में चलाया गया आंदोलन 'असहयोग आंदोलन' (Non-Co-operation Movement) कहलाता है।

26 दिसम्बर, 1920 ई. को नागपुर (महाराष्ट्र) में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन आरंभ हुआ, जो 31 दिसम्बर, 1920 ई. तक चला। इस अधिवेशन की अध्यक्षता *विजय राघवाचारी* ने की। इस अधिवेशन में *गाँधीजी* द्वारा कांग्रेस के विशेष अधिवेशन (सितम्बर, 1920; कलकत्ता) में पारित असहयोग प्रस्ताव का पुनः समर्थन किया गया। असहयोग आंदोलन के तहत दो तरह के कार्यक्रम थे—नकारात्मक एवं सकारात्मक। नकारात्मक कार्यक्रम के अन्तर्गत शामिल थे—सरकारी उपाधियों का त्याग, सरकारी करों को न चुकाना, अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, न्यायालयों का बहिष्कार, मद्य निषेध का प्रचार आदि। सकारात्मक (रचनात्मक) कार्यक्रम के अन्तर्गत शामिल थे—राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना, खादी आश्रम की स्थापना आदि।

गाँधीजी के आह्वान पर झारखंड के लोग असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। 1920–21 ई. में गाँधीजी खुद झारखंड आये और राँची में भीमराज बंशीधर मोदी धर्मशाला में ठहरे। उसी धर्मशाला के सामने विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। लोगों ने खादी पहनने और चरखा चलाने का व्रत लिया। अति महत्वपूर्ण बात यह हुई कि गाँधीजी का टाना भगतों से सम्पर्क हुआ। टाना भगत दल-के-दल गाँधीजी के शिष्य बने। खादी बुनना, खादी पहनना; पैसा-दो पैसा जो उनके पास था, उसे गाँधी बाबा को समर्पित कर देना उनका धर्म बन गया। खद्दरधारी, गाँधी टोपी पहने, शंख व घंटी बजाते 'टाना बाबा टाना, टान टुन टाना' भजन गाते टाना भगतों की टोली गाँधीजी को अत्यंत प्रिय लगती थी। गाँधीजी ने खुद स्वीकार किया था कि उनके सारे शिष्यों में टाना भगत सर्वोत्कृष्ट थे।

Scanned with CamScanner

असहयोग आंदोलन से पूरा झारखंड आंदोलित हो उठा। सभाओं और जुलूसों के माध्यम से संदेश जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जाने लगा।

आंदोलन का क्षेत्रवार विवरण इस प्रकार है—

पलामू : कांग्रेस के विशेष अधिवेशन (सितम्बर, 1920 ई; कलकत्ता) से लौटे हुए पलामू के केंड ग्राम निवासी आदिवासी नेता *धनी सिंह खरवार* के नेतृत्व में पलामू किला के हाते में एक सभा हुई, जिसमें निर्णय लिया गया कि जंगलों को काट कर कपास की खेती की जाय जैसा कि गाँधीजी ने विशेष अधिवेशन में झारखण्डियों से कहा था। फलस्वरूप एक ही दिन में हजारों पेड़ काट डाले गए और खेत तैयार किये गए। *धनी सिंह खरवार* को 'पलामू का राजा' घोषित किया गया। उनके नेतृत्व में आदिवासियों का एक विशाल जुलूस डाल्टेनगंज पहुँचा, लेकिन उसे लाठी चार्ज कर तथा घोड़े दौड़ा कर बिखेर दिया गया। पलामू के नेताओं *देवकी प्रसाद सिन्हा, हीरानंद ओझा, दुर्गानंद ओझा, विंदेश्वरी पाठक, शेख मुहम्मद हुसैन, देव नारायण मेहता* आदि के प्रयासों से 10 अक्तूबर, 1920 ई. को डाल्टेनगंज में बिहारी छात्र सम्मेलन (बिहारी स्टूडेंट्स कॉन्फ्रेंस) का 15वाँ अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता *सी.एफ.एंड्रुज* ने की। इस अधिवेशन में शामिल होने वाले प्रमुख नेताओं के नाम थे—*मजहरूल हक, चंद्रवंशी सहाय, कृष्ण प्रसन्न सेन, अब्दुल बारी, जी. इमाम* एवं *हसन आरजू*। अधिवेशन में ब्रिटिश सरकार के साथ असहयोग करने का प्रस्ताव पारित किया गया एवं स्वदेशी कपड़ों के अंगीकार का व्रत लिया गया। इस अधिवेशन के तत्काल बाद डाल्टेनगंज में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई जिसके प्रधानाध्यापक *बिंदेश्वरी पाठक* बनाये गए। यह राष्ट्रीय विद्यालय राष्ट्रवादी गतिविधियों के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरा। हुसैनाबाद के टोल को राष्ट्रीय माध्यमिक विद्यालय बनाया गया। कई गाँवों में राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना की गईं जहाँ ग्रामीण अपने झगड़ों को खुद निपटाते थे। 1921 ई. में डाल्टेनगंज, पांकी एवं जपला में हुई जनसभाओं में चरखा-खादी, स्वदेशी, मद्य निषेध, अस्पृश्यता निवारण आदि पर जोर दिया गया। इन सभाओं में प्रमुख वक्ता की भूमिका निभानेवालों के नाम हैं—*राम नाथ पाण्डेय, भागवत पाण्डेय, बिंदेश्वरी पाठक* आदि। जनवरी, 1922 ई. में योग आश्रम, वाराणसी के *मणीन्द्रनाथ स्वामी* का भाषण डाल्टेनगंज में हुआ। उसी वर्ष जब *महात्मा गाँधी* गिरफ्तार कर लिये गए तो पलामू में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया देखने को मिली। *देवकी प्रसाद सिन्हा* एवं *कृष्ण वल्लभ सहाय* ने पलामू का तूफानी दौरा किया।

राँची : झारखण्ड में असहयोग आंदोलन का एक प्रमुख केन्द्र राँची था। 1920–21 ई. में लोहरदगा, डोरंडा, राँची, सेन्हा, मधुकुम, इटकी, घाघरा, ओरमांझी, कोकर, तमाड़, गुमला, बुंडु एवं कारो में कई जन सभाएं हुईं। इनमें *गुलाब तिवारी, मौलवी उस्मान, स्वामी विश्वानन्द* आदि नेताओं के भाषण हुए। नवम्बर, 1921 ई. में राँची में वार्षिक पिंजरापोल समारोह हुआ जिसमें *पद्मराज जैन, भोलानाथ वर्मन, मौलवी जकारिया, अब्दुर रज्जाक* एवं *सुन्दर दत्त* के भाषण हुए। *टहल ब्रह्मचारी, गुलाब तिवारी, मौलवी उस्मान* आदि के प्रयासों से आदिवासी भी भारी संख्या में इस आंदोलन की ओर आकर्षित हुए। भोले-भाले, सीधे-सादे आदिवासी तो यह भी समझने लगे थे कि अंग्रेजों का राज समाप्त हो गया और गाँधी राज स्थापित हो गया। राँची, लोहरदगा आदि में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गईं।

हज़ारीबाग : झारखंड में असहयोग आंदोलन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र हज़ारीबाग था। यहाँ कई विद्यार्थियों ने पढ़ाई छोड़ दी, कई वकीलों ने वकालत छोड़ दी। जिला कांग्रेस कमिटी की स्थापना हज़ारीबाग में 1920 ई. में हुई। 1921 ई. में यह आंदोलन और तीव्र हो गया। फलस्वरूप हज़ारीबाग में *बजरंग सहाय, कृष्ण वल्लभ सहाय, सरस्वती देवी, त्रिवेणी प्रसाद* एवं *शालिग्राम सिंह* को जेल भेज दिया गया। गिरिडीह में एक दंगा हो गया जिसे पुलिस ने तत्काल दबा

Scanned with CamScanner

दिया। चतरा, हज़ारीबाग, धनबाद और पुरुलिया में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गई। इन विद्यालयों के सहायतार्थ कुछ धन भी जुटाये गये, किन्तु अधिकांश विद्यालय अर्थाभाव में बंद हो गए। 1921 ई. में ही असहयोग आंदोलन के क्रम में कई स्थानों पर शराब की भट्ठियाँ तोड़ी गईं या उन्हें जबरन बंद करा दिया गया। 5–6 अक्तूबर, 1921 ई. को हज़ारीबाग में बिहारी छात्र सम्मेलन (बिहारी स्टूडेंट्स कॉन्फ्रेंस) का 16वां अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता *सरला देवी* ने की। इस अधिवेशन में *बजरंग सहाय, कृष्ण वल्लभ सहाय, राम नारायण सिंह* आदि ने भाषण किया। इस अधिवेशन में सरकारी स्कूल-कॉलेजों के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार एवं स्वयंसेवकों की सेवाओं से जुड़े प्रस्ताव पारित किये गए।

सिंहभूम : झारखंड में असहयोग आंदोलन का एक प्रमुख केन्द्र सिंहभूम था। सिंहभूम के चक्रधरपुर में एक राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई। गोलमुरी मैदान में 5–6, 8–9 फरवरी, 1921 ई. को जन सभाओं का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता क्रमशः *बी.जी.साठे* (5 फरवरी), *प्रभास चन्द्र मित्र* (6 फरवरी), *के. के. भट्ट* (8 फरवरी) एवं *अब्दुल गनी* (9 फरवरी) ने की। इन सभाओं को काठियावाड़ निवासी *हरि शंकर व्यास जी* ने संबोधित किया। बाल गंगाधर तिलक की प्रतिमा समेत टाउन हॉल की स्थापना के लिए धन इकट्ठा किया गया। *जय नारायण मारवाड़ी, शिवराम मारवाड़ी, रामेश्वर महाराज, गोदावरी मिश्र* आदि चक्रधरपुर में शराबबंदी अभियान में सक्रिय थे। 8 मार्च, 1921 ई. को गोलमुरी मैदान में फिर सभा हुई, जिसे *कृष्ण राज, जी. सेठी, तेजा सिंह* आदि ने संबोधित किया। 15 मार्च, 1921 ई. को जमशेदपुर में पूर्ण हड़ताल रही। 13 मार्च, 1921 ई. को चाईबासा में एक सभा हुई, जिसमें *मौलाना उस्मान अली, विभूति भूषण बनर्जी* एवं *राम चन्द्र शाही* के भाषण हुए। नासिक निवासी *हाजी अब्दुल्ला* के चाईबासा व चक्रधरपुर में असहयोग के पक्ष में मई में भाषण हुए। जून, 1921 ई. में *मजहरूल हक* चक्रधरपुर आये। 1921 के कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में *गुरुचरण हो* ने अपने साथियों के साथ भाग लिया। फरवरी, 1922 ई. में पुरी के *अनंत मिश्र* का चाईबासा में भाषण हुआ।

संथाल परगना : झारखंड में असहयोग आंदोलन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र संथाल परगना था। असहयोग आंदोलन के क्रम में जामताड़ा हाई स्कूल के छात्रों ने 13 जनवरी, 1921 ई. को स्कूल का बहिष्कार किया। देवघर हाई स्कूल के छात्रों ने, जिनमें *पंडित विनोदानंद झा* व *प्रफुल्ल चंद्र सेन* प्रमुख थे, राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना की मांग की। आंदोलन शीघ्र ही मधुपुर व साहेबगंज में भी फैल गया। *पंडित विनोदानंद झा* जैसे युवा स्वयंसेवी खादी वस्त्रों के गट्ठर लाद गाँव-कस्बों तक पहुँचे। जनवरी, 1922 ई. में साहेबगंज में रेलकर्मियों की हड़ताल हुई। सशस्त्र पुलिस ने लोगों पर जुल्म ढाये। कई लोगों को दंडित किया गया।

असहयोग आंदोलन में सजाप्राप्त राजनीतिक बंदी (झारखंड)

क्र.	जिले का नाम	राजबंदियों के नाम
1.	पलामू	वारिस इमाम, अमृत महतो, रामधनी साव, झम्मन साहू, नकछेदी साहू, बालचन्द साहू, हुसैनी साहू, अचम्भित राम, टिकैत राम, राम नन्दन राम, शिवनंदन राम, जदुपति सिंह, भागेश्वर दूबे, धनी सिंह व भागवत पाण्डे।
2.	हज़ारीबाग	राम नारायण सिंह, शुभ नारायण लाल, बजरंग सहाय, रामेश्वर चौबे, जयराम साहू, चरण साहू, टाकोलाल साहू, भोली सिंह व फूलन सिंह।
3.	सिंहभूम	बिशुन राम महरी व हाजी अब्दुल्ला।
4.	संथाल परगना	जिया साहू, राम जानकी साहू व रामजस मारवाड़ी।
5.	मानभूम	स्वामी सोमेश्वरानंद।

Scanned with CamScanner

असहयोग आंदोलन की समाप्ति : 11 फरवरी, 1922 ई.

5 फरवरी, 1922 ई. को संयुक्त प्रांत (आज का उत्तर प्रदेश) के गोरखपुर जिले में चौरी-चौरा गाँव में 3000 किसानों के एक कांग्रेसी भीड़ पर पुलिस ने गोली चलाई। क्रुद्ध भीड़ ने पुलिस थाने पर हमला करके उसमें आग लगा दी जिससे 22 पुलिसकर्मी मारे गए। चौरी-चौरा कांड से *गाँधीजी* बहुत दुःखी हुए और उन्होंने 11 फरवरी, 1922 ई. को कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बारदोली (गुजरात) बैठक में असहयोग आंदोलन को स्थगित करने का निर्णय लिया।

Scanned with CamScanner